

स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस  
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

‘बालिका शिक्षा दिवस’ और ‘बाल दिवस’

“सृजन” 13/11/2017

फेश पेंटिंग, रंगोली एवं ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन

**DainikBhaskar.com**  
15, Nov | Indore City Bhaskar

PAGE  
2



प्रिंसिपल मंजू नौटियाल ने प्रस्तुत किया। कीजिए 8889438943 पर।

## रंगोली व फेस पेंटिंग से दिया बालिका शिक्षा का संदेश

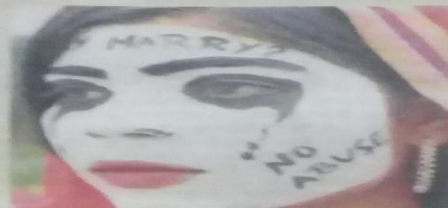
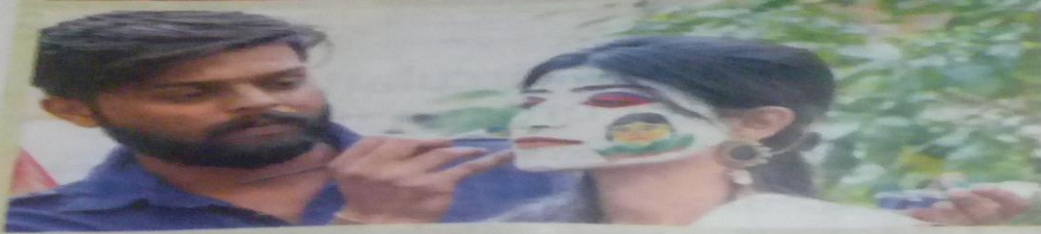


सिटी रिपोर्टर | इंदौर

चिल्ड्रेंस डे के मौके पर सोमवार को देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस में हुए कार्यक्रम ‘सृजन’ में बालिका शिक्षा, बालश्रम और सोशल मीडिया का प्रभाव विषयों पर स्टूडेंट्स ने प्रस्तुति दी। स्टूडेंट्स ने

रंगोली और फेस पेंटिंग कर बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने का संदेश दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी दी गई। विभागाध्यक्ष डॉ. रेखा आचार्य ने बताया कि स्टूडेंट्स ने अपनी प्रस्तुतियों के जरिये बालश्रम समाप्त करने सहित कई सोशल मैसेज दिए।

## SCHOOL OF SOCIAL SCIENCES, DAVV HOSTS SRAJAN



students, research scholars and alumni participated in the event donning traditional dresses. The event was guided by Dr Rekha Acharya, HOD of the department and coordinated by prof Akanksha Tripathi

PHOTOS BY: ANAND SARMA

School of Social Sciences, DAVV organised a programme 'Srajan' marking Girl Child Education Day along with Children's Day recently. The event included theme based cultural activities including, face painting and rangoli making. Students participated in the activities and raised awareness on social issues related to girl education. They also showcased that girl education along with child labour abolition is need of the hour. MSW

स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर) में 'बालिका शिक्षा दिवस' और 'बाल दिवस' के अवसर को मनाने के लिए 13/11/2017 को एक कार्यक्रम "सृजन" का आयोजन किया है।

कार्यक्रम में विभिन्न सामाजिक समस्याओं जैसे बाल श्रम उन्मूलन, बालिका शिक्षा से संबंधित सामाजिक मुद्दों पर फेश पेंटिंग, रंगोली एवं ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सामाजिक मुद्दों पर जागरुकता पैदा करना है जो भारत की सबसे महत्वपूर्ण चिंता है। इस कार्यक्रम को विभागाध्यक्ष एवं डीन डॉ. रेखा आचार्य द्वारा निर्देशित किया गया और सुश्री आकांक्षा त्रिपाठी द्वारा कार्यक्रम को समंविता किया गया। कार्यक्रम में सभी शिक्षकगण डॉ. वर्षा पटेल, डॉ. सारिका दीक्षित और श्री अरविंद सिंह परिहार द्वारा अपेक्षित सहयोग प्रदान किया गया। एम.एस.डब्ल्यू के छात्रों, शोधार्थियों और पूर्व छात्रों ने पारंपरिक ड्रेस पहनकर इस कार्यक्रम में भाग लिया।



## मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में जागरूकता कार्यक्रम 25 जनवरी 2018

स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर) में 25/01/2018 को मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समाज कार्य के विद्यार्थियों एवं सभी शिक्षक और शोधार्थियों को विभागाध्यक्ष एवं डीन डॉ. रेखा आचार्य द्वारा मतदाता दिवस की शपथ दिलाई गई, साथ ही समाज कार्य के विद्यार्थियों द्वारा शहर में विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगो को जागरूकता प्रदान करने का कार्य किया और उन्हें शपथ दिलाई गई।



**परिचर्चा**  
**रोल ऑफ टेक्नोलॉजी इन सोशल डेवलपमेंट**  
**6 जनवरी 2018**



6 जनवरी 2018 को 3.00 बजे स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर) द्वारा एक परिचर्चा का आयोजन 'रोल ऑफ टेक्नोलॉजी इन सोशल डेवलपमेंट' विषय पर विभागाध्यक्ष डॉ. रेखा आचार्य के नेतृत्व में किया गया।

जिसमें इन्होंने कहा कि तकनीकी विकास के साथ आज जरूरत है मानव मूल्यों के विकास की समय के साथ तकनीक बदल रही है इसके साथ समाज भी बदल रहा है परन्तु इन सब में

सामाजिक मूल्य घटते जा रहे हैं अब सोशल इंटरकनेक्शन खत्म होता जा रहा है यह तकनीक का नकारात्मक प्रभाव है इससे बचने के लिए टेक्नोलॉजी और सामाजिक संबंधों में बैलेंस हो ये तभी संभव हो जब लोगों के अंदर वैल्यूज हो ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. नरेंद्र धाकड़ (कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर) द्वारा की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप सुनील चतुर्वेदी ( निर्देशक, विभावरी, देवास) ने विषय से संबंधित अपने विचार व्यक्त किये, जिसमें इन्होंने कहा कि टेक्नोलॉजी ने हमारे जीवन को कई स्तरों पर बेहतर बनाया है। जाहिर है इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि टेक्नोलॉजी का हम किस तरह से इस्तेमाल कर रहे हैं इसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलु हैं यह हमारे विवेक पर निर्भर करता है कि इसका इस तरह से इस्तेमाल किया जाए कि इससे हमारा और समाज का सही दिशा में विकास हो सके यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि टेक्नोलॉजी से समाज का अहित न हो इसलिए मानव विकास के लिए सस्टेनेबल डेवलपमेंट जरूरी है इसमें टेक्नोलॉजी हमारी मदद कर सकती है आज जिस प्रकार तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है, उससे सस्टेनेबल डेवलपमेंट की तरफ न जाते हुए विपरीत दिशा में जा रहा है यह मनुष्य विकास के लिए हानिकारक है आने वाली पीढ़ी को सिर्फ अपने बारे में न सोचते हुए समाज के विकास के बारे में सोचना चाहिए इसके लिए जरूरी है कि तकनीक का सकारात्मक विकास की ओर इस्तेमाल हो, यह बात सुनील चतुर्वेदी ने परिचर्चा में कही इतिहास के प्राध्यापक जे सी उपाध्याय जी ने भी तकनीक के ऐतिहासिक पक्ष के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सारिका दीक्षित एवं डॉ. वर्षा पटेल द्वारा किया गया। परिचर्चा में समाज विज्ञान अध्ययन शाला के फैकल्टी श्री अरविंद सिंह चौहान एवं सुश्री आकांक्षा त्रिपाठी अन्य महाविद्यालयों के प्राध्यापकगण, शोधार्थी एवं सभी छात्र छात्राएँ सम्मिलित हुए।



विशेष व्याख्यान

दिनांक – 28/01/18

विशेष अतिथि– प्रो. अशोक मेहता (अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ )

विषय – शोध प्रविधि



आज दिनांक 28/01/18 को समाज विज्ञान अध्ययनशाला में शोध प्रविधि पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा आचार्य द्वारा कराया गया। जिसमें पीएच.डी. कोर्स वर्क के शोधार्थी उपस्थित हुये।

विशेष अतिथि द्वारा पीएच.डी. शोध लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिये शोधार्थियों को बताया गया। उनके अनुसार शोध प्रविधि हर विषय की लगभग समान होती है परंतु यंत्र (Tools) अलग अलग होते हैं। साहित्य के पुर्नरावलोकन के अंतर्गत जरनल्स, पुस्तकें पढ़ना बहुत आवश्यक है।

साहित्य के पुर्नरावलोकन में टेक्स्ट बुक का उपयोग नहीं करना चाहिये। भूतपूर्व शोध कार्य का सारांश एक पैराग्राफ में लिखना चाहिये। तथा पुराने से नये प्रकाशन की ओर जाना चाहिये ताकि यह पता चल सके कि लोग किन- किन मुद्दों पर शोध कर चुके हैं व शोध कर रहे हैं। इससे कौन से गैप है जिनको अपने शोध में पूरा करेंगे यह सामने आता है।

शोध विषय का चयन करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि क्षेत्र ऐसा न हो जिस पर बहुत काम हो गया हो। शोध लिखने में जिन तथ्यों का उपयोग किया गया है उनका उल्लेख संदर्भ ग्रंथ सूची में अवश्य होना चाहिये। तथ्य दो प्रकार के हो सकते हैं एक सैद्धांतिक तथ्य और दूसरे व्यवहारिक तथ्य। यदि शोधार्थी ने साहित्य के पुर्नरावलोकन कर लिये तो समझाना चाहिये कि 50 प्रतिशत काम हो गया। पीएच. डी शोध की जाँच करते समय महत्वपूर्ण बिंदु जो एक प्रोफेसर ध्यान देते हैं –

1. संदर्भ ग्रंथ सूची में यह अवलोकन किया जाता है कि आपने किस स्तर का साहित्य पढ़ा।
2. आपके उद्देश्य क्या थे उद्देश्य के अनुसार आपके निष्कर्ष हैं या नहीं
3. शोध प्रविधि क्या उपयोग की गयी।

शोध के उद्देश्य विशिष्ट होने चाहिये एवं 4 या 5 उद्देश्य से अधिक नहीं होने चाहिये।

शोध लिखते समय आचार संहिता का ध्यान रखना आवश्यक है प्लेगरिज्म एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है जिसका ध्यान हर एक शोधार्थी को रखना चाहिये। 20 प्रतिशत से अधिक नकल होने पर शोध प्रबंध स्वीकृत नहीं किया जाता है।



## स्वास्थ्य शिविर का आयोजन— 17 फरवरी 2018

समाज विज्ञान अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर एवं फॅमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वाधान में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

समाज विज्ञान अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर एवं फॅमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वाधान में बड़ी कुम्हार खेड़ी, बाण गंगा रोड, इंदौर में महिलाओं, बच्चों एवं किशोरियों के लिए निः शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर दिनांक 17/02/2018 को आयोजित किया गया, जिसमें स्वास्थ्य परीक्षण के अतिरिक्त परामर्श भी दिया गया एवं निः शुल्क दवाइयों का वितरण किया गया फॅमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया के डॉक्टर के साथ समाज विज्ञान अध्ययनशाला की विभागाध्यक्ष एवं डीन डॉ. रेखा आचार्य उपस्थित रही। स्वस्थ शिविर में डॉ वर्षा पटेल, डॉ सारिका दीक्षित, श्री अरविंद सिंह परिहार एवं प्रो. आकांक्षा त्रिपाठी के साथ समस्त समाज कार्य के विद्यार्थियों ने अतुल्य योगदान किया।







## स्वास्थ्य शिविर में बच्चों और महिलाओं की जांच



इंदौर| बड़ी कुम्हारखाड़ी में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। इसमें बच्चों, महिलाओं और बालिकाओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवाइयां दी गईं। डीएवीवी के समाज विज्ञान अध्ययनशाला और फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने जांच कराई। प्रो. आकांक्षा त्रिपाठी ने बताया इस मौके पर डीन डॉ. रेखा आचार्य, डॉ. वर्षा पटेल, डॉ. सारिका दीक्षित, अरविंदसिंह परिहार आदि मौजूद थे।



अंतराष्ट्रीय महिला दिवस— 8 मार्च 2018  
महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम



आज दिनांक 08/03/18 को समाज विज्ञान अध्ययनशाला द्वारा महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



महिलाओं ने माना की वे अपने अधिकारों के बारे में बहुत जानकारी रखती है तथा कुछ का कहना है कि अधिकारों के प्रति सजक तो है किन्तु उन्हें उपयोग में किस तरह लाना है इसकी पूरी प्रक्रिया की जानकारी उन्हें नहीं है।

यह बात उन्होंने समाज विज्ञान अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय द्वारा चलाये गए महिला जागरूकता अभियान में कही। आज अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर समाज विज्ञान अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के समाज कार्य के समस्त विद्यार्थी एवं शोधार्थियों द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम खंडवा रोड स्थित विश्वविद्यालय के गेट के पास सभी युवतियों को उनके कानूनी अधिकारों की जानकारी दी गई, विभागाध्यक्ष डॉ. रेखा आचार्य द्वारा भी महिलाओं को अधिकारों हेतु जागरूक होने के लिए प्रेरित किया गया। डॉ. वर्षा पटेल , डॉ. सारिका दीक्षित एवं प्रोफ. आकांक्षा त्रिपाठी द्वारा भी जागरूकता हेतु सहयोग किया गया। भंवरकुआं चौराहे पर जाकर भी महिलाओं को उनसे सम्बंधित अधिकारों के बारे में अवगत कराया गया, विभिन्न कोचिंग के बाहर भी जाकर समाज कार्य विद्यार्थियों ने 100 महिलाओं से फीडबैक फॉर्मस भी भरवाए, जिसके द्वारा यह पता चला की पढ़े लिखे युवाओं में भी जागरूकता की कमी है। आज समाज में महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए जागरूक रहना बहुत आवश्यक है। विद्यार्थियों के साथ प्रोफ. आकांक्षा त्रिपाठी द्वारा भंवरकुआं से गीता भवन तक आई— बस में सफर करके महिलाओं को जागरूक किया गया एवं उनके जानकारी दी गई। समान वेतन का अधिकार, कार्य पर होने वाले उत्पीड़न के खिलाफ अधिकार, घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकार , मातृत्व सम्बन्धी लाभ , कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार, रात में गिरफ्तार न होने का अधिकार, संपत्ति पर अधिकार तथा अन्य अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया .